आर. एन. आई – राजहिन/2003/9899 डाक पंजीयन संख्या – श्रीगंगानगर/105/2014-2016

मासिक पत्रिका

अजायब बानी

वर्ष : बारहवां अंक : बारहवां अप्रैल-2015

सावन शाह जी आओ 4

भजन गाने का महत्त्व 6

परमात्मा की भक्ति 11

शादी 29

संपादक-प्रेम प्रकाश छाबड़ा
099 50 55 66 71 (राजस्थान)
098 71 50 19 99 (दिल्ली)

उप संपादक-नन्दनी

विशेष सलाहकार-गुरमेल सिंह नौरिया
099 28 92 53 04
096 67 23 33 04

सहयोग-परमजीत सिंह

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक, मुद्रक व संपादक : प्रेम प्रकाश छाबड़ा ने नेशनल प्रिन्टर्स, नारायणा, नई दिल्ली से छपवाकर सन्तबानी आश्रम 16 पी.एस. रायसिंह नगर – 335 039 जिला – श्री गंगानगर (राजस्थान) से प्रकाशित किया।

e-mail : dhanajaibs@gmail.com | Website : www.ajaibbani.org

प्रकाशन दिनांक 1 अप्रैल 2015 -157- मूल्य – पाँच रुपये

सावन शाह जी आओ

सावन शाह जी आओ, दर्श दिखाओ,
कई जन्मां दे, रोग मिटाओ, (2)

1. दर्श बिना सानूं, चैन ना आवे,
इक–इक पल, युग बीत दा जावे, (2)
काल दी नगरी चों, आण बचाओ,
कई जन्मां दे .....

2. मैं गुनाहागार तूं, बक्शनहारा,
समझो यतीम आ, देवो सहारा, (2)
बेड़ी मझधार चों, पार लगाओ,
कई जन्मां दे .....

3. डाकु लुटेरे, फिरन चुफेरे,
दया करो दाता, जीव हां तेरे, (2)
काल दे पंजे चों, आण छुड़ाओ,
कई जन्मां दे .....

4. गरीब 'अजायब' दी सुण अरजोई,
तेरे बिना किते, मिलदी ना ढोई, (2)
सावन शाह जी आओ, देर ना लगाओ,
कई जन्मां दे .....

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज

भजन गाने का महत्त्व

उठ जाग मुसाफिर भोर भई, अब रैण कहाँ जो सोवत है।
जो सोवत है वो खोवत है, जो जागत है वो पावत है।
उठ नींद से अक्खियां खोल जरा और अपने गुरु से ध्यान लगा।
यह प्रीत करन की रीत नहीं, गुरु जागत है तू सोवत है।।

अभी पप्पू ने शब्द बोला है कि *यह प्रीत करन की रीत नहीं गुरु जागत है तू सोवत है।* दुनियादार जब सोते हैं तो उनकी आत्मा मन इन्द्रियों के घाट से नीचे आ जाती है लेकिन सन्तों के सोने में फर्क है। सन्तों की आत्मा ऊपर के मंडलों में जाती है सन्त सोते हुए भी किसी न किसी की संभाल कर रहे होते हैं, किसी को दर्शन दे रहे होते हैं इसलिए वे हमेशा ही जागते रहते हैं।

मुसलमानों में राबिया बसरी बहुत कमाई वाली मशहूर महात्मा हुई है। एक बार उसने पूरी रात सोने में ही गुजार दी। उसके प्रेमी भक्तों को अनुभव हुआ कि राबिया बसरी मर चुकी है। जब सुबह प्रेमी भक्त उसके पास पहुँचे तो उन्होंने देखा कि वह जीवित थी। सब प्रेमियों ने अपना-अपना तजुर्बा बताया। राबिया बसरी ने कहा, ''आपका तर्जुबा ठीक है, मैं रात को सो गई थी मेरी तबीयत ठीक नहीं थी इसलिए मैं उठ नहीं सकी। आपको स्वाभाविक ही यह तर्जुबा होना था।'' कबीर साहब भी कहते हैं:

तेरे नाम दा भरोसा भारी रखीं लाज प्यारेया दी।
नाम जपो जी ऐसे ऐसे ध्रुव प्रह्लाद जपयो हर जैसे।
ध्रुव प्रह्लाद जपयो हर जैसे, रक्खीं लाज प्यारेयां दी।।

कबीर साहब इस शब्द में समझा रहे हैं कि ध्रुव प्रह्लाद की तरह नाम जपें। ध्रुव के पिता की दो शादियां थी। ध्रुव खुशी-खुशी

से बाहर खेल रहा था। पिता के दिल में प्यार उठा तो उसने ध्रुव को गोद में ले लिया। उसकी सौतेली माँ को बहुत दुख और ईर्ष्या हुई उसने ध्रुव को उसके पिता की गोद से उठा दिया। ध्रुव की सौतेली माँ ने कहा, ''अगर तुझे अपने पिता की गोद में बैठना था तो मेरे पेट से जन्म लेता।'' ध्रुव ने अपनी माँ से पूछा कि तू इस घर की गोली है या रानी है? उसकी माता ने कहा, ''बेटा! मैं रानी हूँ लेकिन मैंने पिछले जन्म में अच्छा कर्म नहीं किया इसलिए मेरी ये हालत है।'' ध्रुव ने अपनी माता से पूछा, ''माता! तू मुझे यह बता कि ऐसा कौन सा साधन हैं जिससे दुश्मन मित्र दिखने लग जाएं?'' माता ने कहा कि तू नाम की कमाई कर तू पवित्र हो जाएगा।

ध्रुव के दिल में वैराग्य पैदा हुआ कि ऐसे परमेश्वर के नाम की भक्ति करनी चाहिए जिससे दुश्मन भी मित्र दिखने लग जाएं। नारद के दिल में ख्याल आया अगर कोई गुरु के बिना भक्ति करता है तो उसे राम भी ठुकरा देते हैं। यह बालक है इसे तो पता ही नहीं कि गुरु की कितनी जरूरत है।

हमारे सतगुरु महाराज कहा करते थे, ''भूखे को रोटी प्यासे को पानी कुदरत का असूल है जरूर मिलता है।'' अगर हमारी जबरदस्त इच्छा है चाहे उस वक्त कोई महात्मा इस संसार मंडल में न हो तो परमात्मा किसी न किसी सच्चखंड पहुँचे हुए महात्मा को हुक्म देता है कि आप इसे 'नाम' के साथ जोड़ दें। नारद ने वहाँ प्रकट होकर ध्रुव को 'नाम' का भेद दिया। ध्रुव ने वक्त खराब नहीं किया नाम की कमाई की।

जब राजा को पता चला कि मेरा बेटा उदास होकर घर से प्रभु की भक्ति करने चला गया है। तब राजा ने ध्रुव से कहा, ''तू राज्य

कर। मैं बूढ़ा हूँ मैं भक्ति करूंगा।'' ध्रुव ने कहा कि मुझे राज्य की जरूरत नहीं क्योंकि इस राज्य और सामान ने साथ नहीं जाना।

हार चले गुरुमुख जगजीता।

दुनियादार इस संसार में हमेशा जीत का दावा करते हैं लेकिन महात्मा दुनिया में आकर कभी भी लड़ते-झगड़ते नहीं। वे इस दुनिया में जीत प्राप्त करना नहीं चाहते क्योंकि यहाँ की जीत या हार हमारे साथ नहीं जाएगी। हमारे साथ जाने वाली 'शब्द-नाम' की कमाई है या हमारे साथ सतगुरु ने जाना है क्यों न उसके साथ प्यार किया जाए जिसने हमारा साथ देना है।

इसी तरह प्रह्लाद के पिता हिरण्यकश्चप के दिल में अहंकार हुआ कि मुझसे बड़ा कोई प्रभु नहीं। सब मेरी भक्ति करें मैं सबका बादशाह हूं; सारी प्रजा उसका नाम जपने लगी।

जले हिरण्यकश्चप थले हिरण्यकश्चप।
है भी हिरण्यकश्चप होसी भी हिरण्यकश्चप।।

मालिक बहुत दयालु होता है। वह जीवों को अपने साथ मिलाने के लिए खुद सामान बनाता है। परमात्मा ने हिरण्यकश्चप के घर में अपना भक्त प्रह्लाद पैदा किया। सारी प्रजा हिरण्यकश्चप का नाम जपती थी लेकिन प्रह्लाद ने बगावत कर दी और कहा, ''परमात्मा कोई और शक्ति है, परमात्मा के पास अहंकार नहीं ये अहंकारी है।''

प्रह्लाद ने दुनिया की लोक-लाज छोड़कर पिता से बगावत करके गुरु से नाम-शब्द लिया और नाम की कमाई की। हिरण्यकश्चप ने प्रह्लाद को हर तरह के कष्ट दिए। उसे तपते हुए खंबे से चिपकवाया। हिरण्यकश्चप ने कहा, ''तेरा राम है तो वह आकर दिखाए।''

इतिहास में जिक्र आता है कि प्रभु ने एक चींटी का रूप धारण करके खंबे पर चढ़ना शुरू कर दिया। प्रह्लाद के दिल में ख्याल आया कि परमात्मा हर एक की रक्षा करता है। जब वह छोटी की चींटी की रक्षा कर रहा है तो मेरी रक्षा क्यों नहीं करेगा? प्रह्लाद ने खुशी से खंबे को गले से लगाया, खंबे का सेक खत्म हो गया।

कबीर साहब कहते हैं, ''विश्वास के साथ इस तरह नाम जपें जिस तरह ध्रुव और प्रह्लाद ने छोटी उम्र में नाम जपा और वे कामयाब हुए।'' गुरु साहब कहते हैंः

जुग जुग भक्ति उपाय कै, पैज रखदा आया रामा।

युगों-युगों में मालिक ने अपने प्यारे भेजे अगर दुनिया ने मालिक के प्यारों को कोई कष्ट दिया या उनकी कोई परिक्षा ली तो भगवान ने उनके ऊपर बहुत दया की उनकी इज्जत रखी और अंदर ही उनकी मदद दी।

हिरण्यकश्चप दुष्ट हर मारिया, प्रह्लाद तराया रामा।

हिरण्यकश्चप को सजा दी उसे खत्म किया। इस दुनिया में प्रह्लाद का यश है। आज लोग हिरण्यकश्चप को दुष्ट और प्रह्लाद को भक्त कहते हैं।

अहंकारिआं निन्दकां पीठ दे, नामदेव मुख लाया रामा।

उस समय हिन्दुस्तान में जाति-पाति का बहुत रिवाज था। नामदेव जी छिम्बा(कपड़ा रंगने वाले)जाति से थे। वह एक दिन मंदिर में गए तो पुजारियों ने उनके साथ बहुत घृणा की कि यह नीची जाति का मंदिर में क्यों आ गया है। यह किस तरह परमात्मा की भक्ति कर सकता है, परमात्मा की भक्ति केवल स्वर्ण जाति के लोग ही कर सकते हैं।

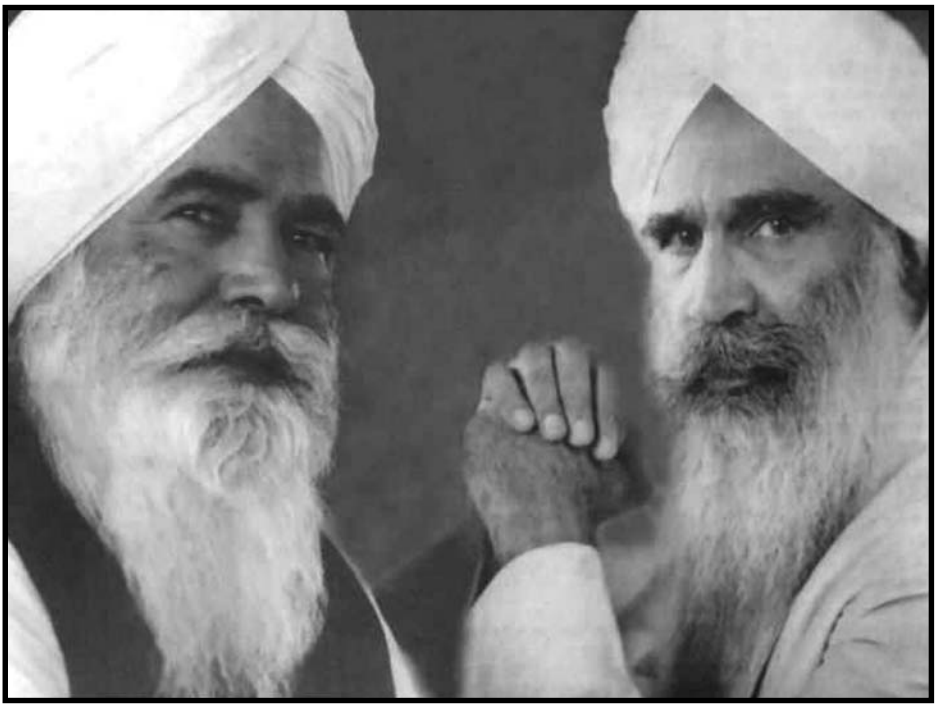

पुजारी ने नामदेव जी का अपमान किया। नामदेव जी को धक्के मारकर मंदिर से बाहर कर दिया। आप मंदिर के पीछे जाकर बैठ गए, परमात्मा ने मंदिर का दरवाजा दूसरी तरफ कर दिया। परमात्मा ने अहंकारियों की तरफ पीठ कर ली और भक्ति की तरफ मुँह कर लिया।

जिन नानक ऐसा हर सेविया, लै अंत छुड़ाऐ रामा।

जिन्होंने परमात्मा की भक्ति की परमात्मा ने उनकी रक्षा की। हमें चाहिए हम परमात्मा की भक्ति करें, भक्ति को बोझ ना समझे, अहंकार न करें। परमात्मा की भक्ति करना अपने ऊपर दया करना है, किसी के ऊपर अहसान नहीं है। दिल लगाकर भजन-सिमरन करें। स्वामी जी महाराज कहते हैंः

अपने जीव की दया पा लो, चौरासी का फेर बचालो।

***

सतसंग- परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज

परमात्मा की भक्ति

फरीद साहब की बानी

मुम्बई

हाँ भाई! हर रोज की तरह आपके आगे सूफी सन्त शेख फरीद साहब की बानी रखी जा रही है। सूफी का मतलब साफ दिल, जहाँ नाम ही नाम हो और दिल के अंदर किसी के लिए भी नफरत न हो क्योंकि सबके अंदर परमात्मा बैठा है। फरीद साहब भजन-अभ्यास में ही रहे, पहले आपको 'शब्द-नाम' का रास्ता नहीं था; आप काफी समय जंगलों में भटकते रहे हैं।

फरीद साहब की जिंदगी काफी तर्जुबे से गुजरी। एक दिन आप जंगल में से आ रहे थे आपको काफी भूख लगी हुई थी। भूख मौत से बुरी है। सुबह खाते हैं पेट शाम को फिर खाना माँगता है, शाम को खाते हैं सुबह फिर भूख लग जाती है। आप कहते हैंः

फरीदा मौतों भुख बुरी, राती सुत्ता खाके तड़के फेर खड़ी।

एक आदमी खरबूजे खाकर जा रहा था। फरीद साहब ने खरबूजे के छिलके उठाकर खा लिए क्योंकि आपको बहुत भूख लगी हुई थी। थोड़ी देर बाद वही आदमी आया, उस आदमी ने फरीद साहब से पूछा, ''यहाँ मेरा चाकू गिर गया है क्या तूने उठाया है?'' फरीद साहब ने उससे कहा, ''मैंने खरबूजे के छिलके तो जरूर खाए हैं लेकिन मैंने तेरा चाकू न देखा है न उठाया है।''

जब किसी ने अहंकार दिखाना हो जबरदस्ती करनी हो तो आप उसके आगे चाहे जितनी मर्जी सफाई दें वह बात ही नहीं सुनता। उस आदमी ने फरीद साहब को मारा-पीटा लेकिन फरीद साहब हँसते रहे। उस आदमी ने फरीद साहब से कहा, ''मैं तुझे मार रहा हूँ, तू हँस क्यों रहा है?'' फरीद साहब ने कहाः

जिन्निआं खुशीया मांणियां तेते लग्गे रोग।
छिल्ला कारण मारीए फल खाए क्या होग।।

आपने कहा, ''मैं इसलिए हँस रहा हूँ कि मैंने तो छिलके ही खाए हैं, मुझे मार पड़ रही है। फल खाने से पता नहीं कितनी मार पड़ेगी?'' फरीद साहब अपनी बानी में जिक्र करते हैं कि बंदा इतना तप-अभ्यास करे कि उसके तन में रत न रहे अगर उसे चीरा जाए तो पानी ही निकले।

कुछ सिक्खों ने गुरु अमरदेव जी के आगे इसी सवाल को रखा कि फरीद साहब की बानी में लिखा है कि इंसान इतना तप करे कि चीरने से भी उसमें से खून न निकले पानी ही निकले क्या यह बात ठीक है या इसके अंदर कोई कमी पेशी है? गुरु अमरदेव जी महाराज ने उन सिक्खों को बहुत प्यार से समझाया कि खून के बगैर तन नहीं हो सकता। जो परमात्मा की भक्ति तप करते हैं उनके अंदर लोभ की रत नहीं रहती क्योंकि उन्हें परमात्मा का, मौत का डर लगा रहता है कि हमें भी हिसाब-किताब देना पड़ेगा इसलिए उनके अंदर से लोभ की रत खत्म हो जाती है। जिस तरह सोना आग का ताप सहकर शुद्ध हो जाता है इसी तरह उनका खून भी शुद्ध हो जाता है। आपने एक बहुत अच्छी साखी सुनाई।

एक ऋषि कुमूत जंगल में तप करता था। जब वह अपने अभ्यास से उठा तो उसके पैर में काँटा चुभ गया। उसने काँटा निकाला लेकिन खून नहीं निकला क्योंकि वह सारी जिंदगी तप-अभ्यास करता रहा। वह इस खुशी में नृत्य करने लगा उसकी खुशी को देखकर पशु-पक्षी भी उसके साथ नृत्य करने लगे। देवताओं ने शिव के आगे विनती की, ''देखो जी! यह क्या हो रहा है? आपने जिंदगी में बहुत तप किए हैं आप इसे समझाएं?''

शिवजी ने उस ऋषि से कहा कि तू इस तरह क्यों कर रहा है? उस ऋषि ने कहा कि मैं तप में सबसे आगे हूँ, मैं शिरोमणि हूँ। मेरे तन में से पानी निकला है खून नहीं निकला। शिवजी ने भी बहुत तप-अभ्यास किए थे। शिवजी ने उसका अहंकार दूर करने के लिए अपने शरीर का कुछ हिस्सा चीरकर दिखाया और कहाः

अहंकारया सो मारया।

तप-अभ्यास का मतलब अपने अंदर नम्रता और आजजी पैदा करना है। फरीद साहब की बानी गौर से सुनेंः

फरीदा रत्ती रत न निकलै जे तन चीरै कोय।
जो तन रत्ते रब स्यों तिन तन रत न होय।
एह तन सभो रत है रत बिन तन न होय।
जो सह रत्ते आपणे तित तन लोभ रत न होय।
भै पइऐ तन खीण होय लोभ रत विच्चों जाय।
ज्यों बैसंतर धात सुध होय त्यों हर का भौ दुरमत मैल गवाय।
नानक ते जन सोहणे जे रत्ते हर रंग लाय।।

आप कहते हैं प्यारेयो! रत के बिना तन नहीं हो सकता। जो अंदर प्रभु के साथ, शब्द के साथ जुड़ जाते हैं उनके अंदर लोभ खत्म हो जाता है। वे इस तरह साफ हो जाते हैं जिस तरह सोने को अग्नि का सेक शुद्ध कर देता है। वे परमात्मा के दरबार में सुंदर लगते हैं, परमात्मा के दरबार में उनकी शोभा होती है।

फरीदा सोई सरवर ढूंढ लहो जित्थों लब्भी वत्थ।।
छप्पड़ ढूंढै क्या होवै चिक्कड़ डुबै हत्थ।।

फरीद साहब कहते हैं, ''आप ऐसी संगत-सोहबत में जाएं जहाँ आपकी जिंदगी बने आपका भूला हुआ मन परमात्मा की

भक्ति में लगे और आप परमात्मा की भक्ति कर सकें। हमारे ऊपर संगत का जबरदस्त असर पड़ता है अगर हम बुरों की संगत करते हैं तो हमारे अंदर बुराई पैदा हो जाती है; अच्छों की संगत करते हैं तो हमारे अंदर भी अच्छे गुण आ जाते हैं।''

एक हंस छप्पड़ में बैठा था। वह छप्पड़ में चोंच मारता है तो उसमें से गंद ही निकलता है। फरीद साहब उस हंस से कहते हैं कि तू सरोवर में जा वहाँ तेरी खुराक मोती हैं; छप्पड़ से तुझे क्या मिलना है? इसी तरह हमें भी अच्छे पुरुषों की सोहबत-संगत में जाकर फायदा उठाना चाहिए।

फरीदा नंढी कंत न रावयो वड्डी थी मुई आस।।
धन कूकेंदी गोर में तै सह ना मिलीआस।।

जब जवानी थी **परमात्मा की भक्ति** का वक्त था। उस समय परमात्मा की भक्ति करके जीवन सफल बनाना था लेकिन जब यह देह कब्र में चली जाती है तब कब्र में जाकर आशा करते हैं कि मुझे परमात्मा मिले, माफ करे।

फरीदा सिर पलया दाढ़ी पली मुच्छां भी पलीआं।।
रे मन गहिले बावले माणह् क्या रलीआं।।

आप प्यार से कहते हैं कि तेरी दाढ़ी-मूछें और सिर के बाल भी सफेद हो गए हैं लेकिन तेरा मन अभी भी परमात्मा की तरफ नहीं आता, रंगरलियों और दुनिया की तरफ ही जाता है।

फरीदा कोठे धुक्कण केतड़ा पिर नीदड़ी निवार।।
जो देंह लधे गाणवें गए विलाड़ विलाड़।।

अब फरीद साहब कहते हैं अगर कोई आदमी छत के ऊपर चढ़कर दौड़े तो वह कितनी दूर चला जाएगा? बस! पच्चीस-पचास फुट दूर ही जाएगा क्योंकि आगे जगह ही नहीं। यही हालत हमारे वजूद की है। परमात्मा ने गिनती के दिन और गिनती के श्वास दिए हैं तू इन श्वासों को गाफिल मन के पीछे लगकर खराब न कर यह देह तो कुछ ही सालों की है। कुछ बचपन में गुजर जाती है, कुछ जवानी की लापरवाही में गुजर जाती है आखिर बुढ़ापा आ जाता है, कफ-बलगम घेर लेते हैं; जोड़ो में दर्द होने लग जाता हैं। तू इस थोड़ी सी जिंदगी के बाद आगे कहाँ जाएगा?

फरीदा कोठे मंडप माड़ीआं एत न लाए चित।।
मिट्टी पई अतोलवीं कोय न होसी मित।।

आप प्यार से कहते हैं कि तू यहाँ दिल लगाकर बैठा है कि मेरा मकान सबसे अच्छा हो, ऊँचा हो और उसमें अच्छी मीनाकारी हुई हो। अफसोस! आखिरी वक्त चाहे कोई राजा है चाहे प्रजा है चाहे किसी भी कौम का मालिक है ऊपर मिट्टी ही पड़नी है। यहाँ दिल लगाकर क्या करेगा? अगर कब्र में पड़ता है तो बेहिसाब मिट्टी डालते हैं अगर जलाया जाता है तो राख की एक मुट्ठी बन जाती है।

फरीदा मंडप माल न लाय मरग सताणी चित धर।।
साई जाय समाल जित्थै ही तौ वंजणा।।

फरीद साहब हमें चेतावनी देते हैं कि दुनिया के पदार्थ, मकान जायदादों में अपने दिल को मत लगा। तू उस जगह को जाकर देख जहाँ तूने मरने के बाद जाकर रहना है क्योंकि वहाँ माता-पिता, बहन-भाई, यार-दोस्त कोई भी साथ नहीं होगा।

अमल जो कीते दुनी विच सिर दरगाह आए काम।

हम जो अमल करते हैं वे ही हमारे गवाह होंगे। वहाँ हमारे अमल करतूत ही हमारे संगी-साथी होंगे।

फरीदा जिनीं कंमीं नाहिं गुण ते कंमड़े विसार।।
मत सरमिंदा थीवही सांई दै दरबार।।

जिन कामों में कोई गुण नहीं उन कामों को छोड़ दें ताकि परमात्मा के दरबार में शर्मिंदगी न उठानी पड़े।

महात्मा कहानी सुनाते हैं कि किसी वेश्या ने अपनी दासी से कहा, ''तू पड़ोस में जाकर देख वह आदमी मरकर स्वर्ग में गया है या नर्क में गया है?'' वहाँ से एक महात्मा गुजर रहे थे उन्होंने सोचा! इस लड़की को इतना ज्ञान कैसे है कि वह आदमी स्वर्ग में जाएगा या नर्क में जाएगा और इसकी दासी को इस तरह का ज्ञान कैसे हो सकता है? महात्मा ने सोचा कि निर्णय करना जरूरी है। महात्मा वहीं बैठ गए। दासी ने वापिस आकर अपनी मालकिन से कहा, ''वह आदमी स्वर्ग में गया है।''

महात्मा ने दासी से पूछा, ''बेटी! तुझे यह कैसे पता लगा कि वह आदमी स्वर्ग में गया है या नर्क में गया है?'' दासी ने कहा, ''महात्माओं से सुना है कि जाने के बाद जिसका यश हो लोग जिसे अच्छा कहें वह आदमी अवश्य ही स्वर्ग में जाता है। जिसके जाने पर लोग लानतें दें कि अच्छा हुआ यह चला गया। अत्याचार करता था लोगों को दुख देता था वह अवश्य ही नर्कों में जाता है।''

फरीद साहब कहते हैं, ''आप वह काम मत करें जिससे आपको मालिक के दरबार में जाकर शर्मिंदगी उठानी पड़े।''

फरीदा साहिब दी कर चाकरी दिल दी लाह भरांद।।
दरवेसां नों लोड़ीऐ रुक्खां दी जीरांद।।

फरीद साहब कहते हैं, ''तू **परमात्मा की भक्ति** कर। सबसे पहले विश्वास कर कि मैं जो काम करता हूं यह ठीक है परमात्मा इसे मंजूर करे। डाँवाडोल मत हो कभी कहता है कि परमात्मा मिलेगा कभी कहता है, नहीं मिलेगा। तू इस भ्रम को दिल से निकाल दे। जिन्हें विश्वास होता है उन्हें परमात्मा जरूर मिलता है और उन्हें अपने घर के अंदर जगह देता है। परमात्मा का भक्त बनना ज्यादा से ज्यादा मुश्किल है।'' कबीर साहब कहते हैंः

फकीरा फकीरी दूर है जैसे पेड़ खजूर।
चढ़ गया ते अमर फल गिर गया ते चकनाचूर।।

मालिक के प्यारे कूड़े-करकट के ढ़ेर की तरह होते हैं। किसी की मर्जी है उस ढ़ेर के ऊपर अच्छा फल फैंके या कूड़ा फैंके, वे बुरा नहीं मानते खामोश होकर सहन कर लेते हैं। इसी तरह फरीद साहब ने पेड़ की मिसाल दी है चाहे कोई पेड़ को काटे चाहे कोई उसके ऊपर पानी डाले चाहे कोई पत्थर मारे पेड़ बुरा नहीं मानता। पेड़ खाने के लिए फल ही देता है। हजरत बाहू कहते हैंः

ज्योंदया मर रहणां होवे तां वेश फकीरा बहिए हू।
जे कोई सिट्टे गुद्दड़ कूड़ा वांग अरूड़ी रहिए हू।
जे कोई कड्डे गाल उलांभा जी जी ओहनूं कहिए हू।।

यह तो सुनने वाले और करने वाले की अपनी मर्जी होती है कि उसने किस भाव से समझना है। चाहे कोई भाव लेकर आए या अभाव लेकर आए यह अपनी-अपनी दृष्टि होती है लेकिन सन्त दोनों के साथ ही प्यार करते हैं। सन्त सबके अंदर परमात्मा को देखते हैं और सबको परमात्मा के बच्चे समझकर ही प्यार करते हैं। उनकी नजर में औरत-मर्द अलग-अलग नहीं। उनके दिल में किसी मुल्क के लिए नफरत नहीं होती वह सबके साथ प्यार करते हैं।

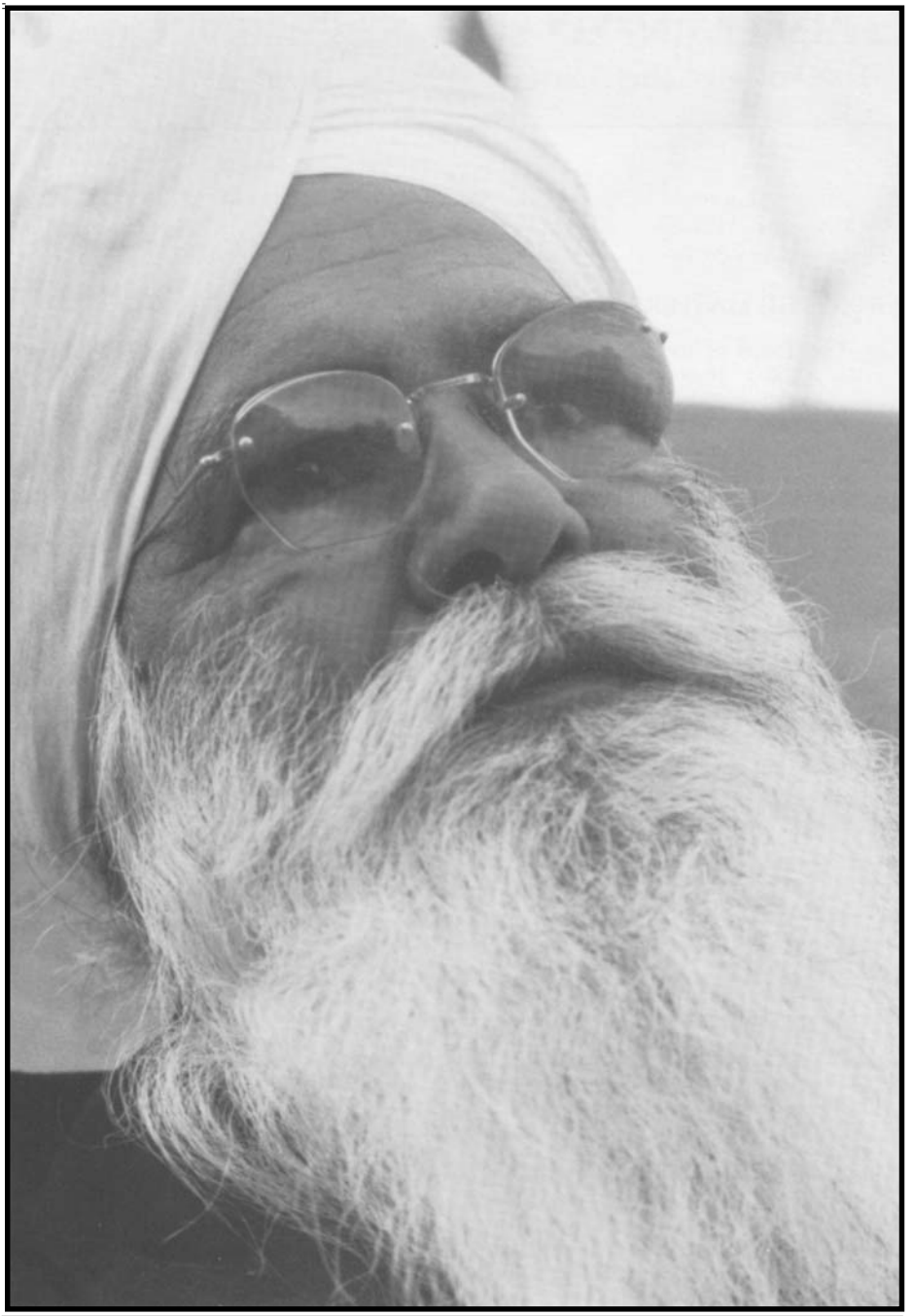

फरीदा काले मैंडे कपड़े काला मैंडा वेस।।
गुनहीं भरया मैं फिरां लोक कहैं दरवेस।।

सन्त मालिक के प्यारे इस संसार में अपनी सच्चाई पेश करने के लिए नहीं आते। वे हमें नम्रता और प्यार सिखाने के लिए आते हैं। वे यह नहीं कहते कि हम सच्चे-सुच्चे हैं बल्कि वे कहते हैं भ्रावो! हम सबसे ज्यादा गुनाहगार हैं। कबीर साहब कहते हैंः

बुरा देखन मैं गया बुरा न मिलया कोए।
जब देखया दिल आपणा मुझसे बुरा न कोए।।

इसका मतलब यह नहीं कि कबीर साहब बुरे थे। वे हमें नम्रता आजजी सिखाते हैं। भ्रावो! परमात्मा को अहंकार प्यारा नहीं नम्रता प्यारी होती है। हमारे सतगुरु महाराज कृपाल कहा करते थे, ''प्रभु से मिलना है तो अपने अंदर दीनता लेकर आओ क्योंकि प्रभु सबका मालिक है वह किसके आगे दीन हो।''

फरीद साहब कहते हैं कि उन दिनों आमतौर पर साधु-फकीर काला पहनावा पहनते थे बाद में भगवा, सफेद और कई रंग के पहनावे चले। जब लोग मुझे फकीर कहते हैं तो मुझे बहुत शर्म आती है कि मेरे अंदर कई अवगुण हैं। गुरु नानकदेव जी कहते हैंः

जप तप संयम धर्म न कमाया,सेवा साध न जाणया हर राया।
कहो नानक हम नीच कर्मा, शरण पड़े की राखो शरमा।।

सेवक की जिंदगी बनाने वाला उसका गुरु है, जब तक गुरु देह में बैठा है वह अहंकार नहीं करता कि पढ़ा हुआ हूँ, किसी हुनर का मालिक हूँ, कमाई वाला हूँ या मैं कोई करामात रखता हूँ। गुरु हमेशा ही अपने दिल के अंदर नम्रता और प्यार रखता है।

तत्ती तोय न पलवै जे जल टुब्बी देय।।
फरीदा जो डोहागण रब दी झूरेंदी झूरेय।।

अब आप प्यार से बहुत अच्छी मिसाल देकर बताते हैं अगर खेती सूख जाए, सड़ जाए फिर चाहे आप उसे पानी में खड़ा कर दें उसमें हरियाली नहीं आएगी, हरे पत्ते नहीं निकलेंगे क्योंकि वह सड़ चुकी है। आप प्यार से समझाते हैं कि जो आत्मा सतसंग में आकर भी नहीं समझती बाद में उसे झुरना पड़ता है कि ओह! मैंने अपनी जिंदगी खराब कर ली। सन्त-महात्माओं का कहना नहीं माना, 'शब्द-नाम' की कमाई नहीं की; मन को बुरी तरफ से मोड़कर अच्छी तरफ नहीं लगाया।

जां कुआरी ता चाओ वीवाही तां मामले।।
फरीदा एहो पछोताओ वत कुआरी न थीऐ।।

इसमें औरत-मर्द का सवाल नहीं। हम जब तक कुँवारे हैं हमें चाव होता है कि हमारी शादी हो जाए। शादी हो जाती है बाल-बच्चे हो जाते हैं तो कई बार उनकी पढ़ाई का खर्च और उनके रिश्ते-नाते करने के लिए कष्ट भी आते हैं फिर इंसान कई बार यह भी सोचता है कि मैं शादी ही न करवाता लेकिन तब तक समय हाथ से निकल चुका होता है। सन्त-महात्मा कहते हैं कि अब आपने गृहस्थ आश्रम में कदम रख लिया है। परमात्मा ने आपको जो जिम्मेवारियां दी है उसे खुश होकर उठाएं, घबराएं नहीं।

जब सेवक को 'नाम' मिल जाता है तो उसके दिल में ख्याल आता है कि मैं किसी न किसी तरह अपनी आत्मा को मन-इन्द्रियों के घाट से ऊपर ले जाकर 'शब्द-नाम' के साथ जोड़ू, कब मेरा पर्दा खुले, कब मैं उस गुरु के नूरी प्रकाश के दर्शन करूं!

परमात्मा बेइंसाफ नहीं। जब वह प्यार-मौहब्बत से अपने ख्याल को एकाग्र करके तीसरे तिल पर पहुंचता है तो परमात्मा पर्दा खोल देता है। जब पर्दा खुल जाता है तो परमात्मा इसे बहुत सारे काम सौंप देता है कि जो आत्माएं मेरे साथ नहीं जुड़ी उन्हें मेरे साथ जोड़ लेकिन आत्माओं को संदेश देना बहुत मुश्किल होता है। संसार में यह संदेश दुख उठाकर देना पड़ता है फिर वह पछताता है कि मैंने ऐसे ही इतना अभ्यास किया? लेकिन जिसे वह एक बार बाँहों में ले लेता है फिर उसे बिछोड़ता नहीं। कबीर साहब कहते हैं:

राम बुलावा भेजया दिया कबीरा रोय।
जो सुख साधु संग है सो बैकुठ न होय।।

कल्लर केरी छप्पड़ी आय उलत्थे हंझ।।
चिंजू बोड़न ना पीवह् उडण संदी डंझ।।

अब आप एक हंस की मिसाल देकर बताते हैं कि हंस गंद के ढ़ेर पर जाकर अपनी खुराक मोती ढूंढने लगा लेकिन वहाँ जाला और कीचड़ ही था। हंस के दिल में ख्याल आया कि मैं उड़ जाऊं इसमें अपनी चोंच न डालूं। जमींदार लट्ठ लेकर आए कि हंस को मारें लेकिन वे ये नहीं जानते थे कि हंस गंद नहीं खाता।

इसी तरह मालिक के प्यारे संसार में आकर हमे प्यार सिखाते हैं लेकिन हम उनके पीछे पड़ जाते है। सन्त-महात्मा किसी की जायदाद पर कब्जा करने के लिए नहीं आते वे तो मुसाफिर की तरह चार दिन काटने के लिए आते हैं, पता नहीं कब परमात्मा की आवाज पड़ जानी है। ऊपर गया हुआ साँस नीचे आएगा या नहीं। लोगों को पता नहीं होता कि महात्मा यहाँ कितना समय रहेगा।

पंजाब में एक पुराना गांव संधु है। मैं वहाँ सतसंग देने के लिए गया। मैंने वहाँ किले के कुछ निशान खड़े हुए देखे तो मैंने उन

लोगों से पूछा कि ये निशान कैसे हैं? और ये धरती बेआबाद क्यों है? उन लोगों ने बताया कि दो सौ साल पहले भी यहाँ आठ घर थे और आज भी आठ घर हैं। हमें एक साधु का श्राप है कि हम लोग कभी फले-फूलेगे नहीं।

उस गांव के लोगों ने बताया कि यहाँ एक साधु तप-अभ्यास करता था। गांव के लोगों ने साधु से कहा कि हमने किला बनवाना है तू एक तरफ हो जा। साधु ने कहा कि तुम दीवार थोड़ी सी पीछे कर लो तो क्या हर्ज है? गांव के लोगों ने साधु से कहा क्या तू इस धरती का मालिक है? साधु ने कहा कि मैं मालिक तो नहीं अगर आप पीछे हट जाएं तो क्या हर्ज है? साधु ने बहुत मिन्नतें की लेकिन गांव के लोगों ने साधु को मार डाला।

साधु ने तो उन्हें क्या बद्दुआ देनी थी। साधु ने कहा था कि तुम्हारा यहाँ सब कुछ पड़ा रह जाएगा। हम जो करते हैं कुदरत सांस-सांस का हिसाब लेती है। उन दिनों आमतौर पर डाके पड़ते थे तभी से गांवो का रिवाज चला कि इकट्ठे होकर रहना चाहिए या बारात इकट्ठी होकर जानी चाहिए। आज यह रिवाज बन चुका है।

हंस उडर कोध्रै पया लोक विडारण जाय।।
गहिला लोक न जाणदा हंस न कोध्रा खाय।।
चल चल गईआं पंखीआं जिनीं वसाए तल।।
फरीदा सर भरया भी चलसी थक्के कवल इकल।।

अब आप कहते हैं कि दुनिया के बहुत से मालिक बड़े-बड़े किले बनाकर यहाँ से खाली हाथ चले गए और हमने भी खाली हाथ चले जाना है। नामदेव जी अपनी बानी में लिखते हैं:

मेरी मेरी कौरव करते दुर्योधन से भाई।
बारह योजन छत्र झुला था देही गिरज न खाई।।

सरब सोने की लंका होती रावण से अधिकाई।
कहाँ भए दर बांध्यो हाथी खिन्न में भई पराई।।

फरीदा इट सिराणे भोएं सवण कीड़ा लड़यो मास।।
केतड़यां जुग वापरे इकत पयां पास।।

आप कहते हैं, ''देख भई प्यारेया! अच्छे रेशमी मखमल के गद्दो की जगह सिरहाने को ईंट मिल जाएगी। कीड़े मांस को तोड़-तोड़कर खाएंगे। किसी ने तुझे सोए हुए को उठाना नहीं। पता नहीं कब्र में कितना समय निकल जाएगा।'' कबीर साहब कहते हैं:

जां जलया तां होय भस्म तन रहे किरम दल खाई।

देह को जलाते हैं तो जलकर राख की एक मुट्ठी हो जाती है अगर इसे कब्र में रखते हैं तो थोड़े समय में ही कीड़े शरीर को तोड़-तोड़कर खा जाते हैं।

फरीदा भंनी घड़ी सवंनवी टुट्टी नागर लज्ज।।
अजराईल फरेसता कै घर नाठी अज्ज।।

फरीद साहब कहते हैं, ''यह देह बहुत अच्छी खूबसूरत है सब इससे प्यार करते हैं। अंदर श्वासों रूपी माला चल रही है लेकिन एक दिन इसने टूट जाना है, पता नहीं मौत का देवता किसके घर मेहमान बनकर लेने आ जाता है; उस पर किसी का जोर नहीं।''

परमात्मा ने हमें इतनी खूबसूरत देह दी है। जब श्वांस रूपी माला टूट जाती है तो आँखें इसी तरह देखती है लेकिन इनकी रोशनी खत्म हो जाती है, हम इन आँखों को ऊपर-नीचे हिला नहीं सकते। मुँह में जुबान है लेकिन यह ऐसे वचन नहीं बोलती जैसे अब हम बोलते हैं। इसी तरह शरीर में टाँगे भी होती हैं लेकिन ये हरकत नहीं करती।

परमात्मा ने दया करके हमें सुंदर स्वरूप दिया है अगर आँख चली जाए तो कीमत देकर भी ऐसी आँख प्राप्त नहीं कर सकते। अगर टाँग चली जाती है बेशक आज के युग में टाँग लगा देते हैं लेकिन वह पहले जैसी टाँग बिल्कुल नहीं होती। अगर हाथ चला जाए तो कुदरत की तरह हाथ प्राप्त नहीं कर सकते।

कई प्रेमियों ने आँखो का ऑपरेशन करवाया तो मैंने उनसे पूछा क्यों भई! अच्छी निगाह बनी है? उन्होंने कहा, हाँ! अच्छी निगाह बनी है दूर तक देख लेते हैं। जब मेरी आँखों का ऑपरेशन हुआ तो पहले की तरह साफ दिखाई नहीं दिया तो मैंने डाक्टर से कहा कि दूर तक तो दिखाई देता है लेकिन साफ दिखाई नहीं देता। डाक्टर बहुत समझदार था उसने कहा महाराज जी! जैसी नजर कुदरत ने दी है यह वैसी नहीं, यह तो काम चलाने वाली है।

महात्मा प्यार से कहते हैं कि परमात्मा ने आपके ऊपर मेहर करके आपको सुंदर स्वरूप दिया है। अंदर श्वासों की माला चलने की वजह से ही माता-पिता, बहन-भाई, यार-दोस्त सब हमारा आदर करते हैं लेकिन जब श्वासों रूपी माला हरकत में नहीं आती तो हमें कोई भी नहीं रखता, कोई कौड़ी देने के लिए भी तैयार नहीं होता। कबीर साहब कहते हैंः

तन ते प्राण होत जब न्यारे, टेरत प्रेत पुकार।
आधी घड़ी कोऊ न राखत घर ते देण निकार।।

फरीदा भंनी घड़ी सवंनवी टुट्टी नागर लज्ज।।
जो सज्जण भोएं भार थे से क्यों आवह् अज्ज।।

धरती पर उन सज्जनों का भी भार है जो सारी जिंदगी मैं-मैं करते हैं **परमात्मा की भक्ति** नहीं करते। किसी को नेक सलाह

नहीं देते और खुद भी नेक सलाह ग्रहण नहीं करते; ऐसे जीव धरती के लिए भारी होते हैं। कबीर साहब कहते हैं:

जो प्रभ कीये भक्त ते वाहंज तिन ते सदा डराने रहिए।

इस संसार से नेक आदमियों ने भी चले जाना है और बुरों ने भी चले जाना है लेकिन आगे जाकर दोनों का ही फर्क पड़ता है। नेक लोगों को परमात्मा के घर में शोभा मिलती है और बुरे लोगों को लानतें सहनी पड़ती हैं।

फरीदा बे निवाजा कुत्तया एह न भली रीत।।
कबही चल न आया पंजे वखत मसीत।।

आप प्यार से कहते हैं देख भई! तू कभी मस्जिद, मंदिर या गुरुद्वारे में गया? हमने प्रेम-प्यार से जितने भी धर्मस्थान बनाए हैं उन्हें बनाने का इतना ही मकसद है कि हम वहाँ जाकर जो कुछ सुनते हैं उस पर अमल करें। घर का कारोबार छोड़कर इन धर्मस्थानों पर जाकर थोड़ी देर **परमात्मा की भक्ति** करें, अभ्यास करें। ये धर्मस्थान रीति-रिवाज के लिए ही नहीं बनाए थे, ये अपने आपको सुधारने के लिए बनाए हैं। मुसलमानों के लिए मस्जिद में जाकर पांच वक्त नवाज पढ़नी जरूरी है। गुरु नानक जी कहते हैं:

पंज नवाजा वक्त पंज पंजे पंजा नाओ।

सबसे पहले यही माला फेरनी है कि नीयत को साफ रखना है। शान्त स्वभाव रखना है। हक-हलाल की रोजी-रोटी खानी है। दिल को मोम बनाना है और सब जीवों पर दया करनी है। जिस परमात्मा ने तुझे पैदा किया है तू उसकी भी बंदगी कर।

उठ फरीदा उजू साज सुबह निवाज गुजार।।
जो सिर साईं ना निवै सो सिर कप्प उतार।।

फरीद साहब हमें चेतावनी देते हैं कि देखो प्यारेयो! आप लोग सुबह उठें अगर पूरा स्नान नहीं होता तो पाँच स्नान करें। पांच स्नान को मुसलमान उजू करना कहते हैं। सुबह अमृत वेले उठकर परमात्मा के साथ जुड़ जाएं, **परमात्मा की भक्ति** करें। जो सिर उस समय परमात्मा के आगे नहीं झुकता परमात्मा की भक्ति नहीं करता उस सिर को काट देना चाहिए। आप कहते हैंः

हौं बलिहारी पंखियां जंगल जिन्हां वास।
कंकर चुगन थल वसन रब न छोडन पास।।

मैं उन पशु-पक्षियों पर बलिहार जाता हूँ जिनका जंगल में वास है। वे सर्दी-गर्मी में अपना खास बचाव नहीं कर सकते, आंधी-तूफान में मारे जाते हैं लेकिन वे भी सुबह उठकर अपनी-अपनी बोली में परमात्मा को याद करते हैं।

जो सिर साईं ना निवै सो सिर कीजै कांय।।
कुंने हेठ जलाईऐ बालण संदै थांय।।

फरीद साहब किसी को यह तर्क नहीं देते बल्कि अपने आपको ही कहते हैं कि जो सिर सुबह के समय अपने आप परमात्मा के प्यार में नहीं झुकता उसे काटकर आग में जला दें क्योंकि मुसलमानों मे जलाने से चिढ़ते हैं। आप उस जाति के होते हुए भी यह लिहाज नहीं रख रहे कि जलाना नहीं चाहिए। आप अपने सुधार की तरफ ख्याल कर रहे हैं कि **परमात्मा की भक्ति** करनी क्यों जरूरी है?

फरीदा कित्थै तैंडे मापयां जिनीं तूं जणयों।।
तैं पासों ओय लद गए तूं अजै न पतीणों।।

फरीद साहब कहते हैं, ''तू सोचकर देख! तू अपनी कुल का मान करता है कि मेरी कुल ही ऊँची है। तेरे माता-पिता कहाँ हैं?

वे भी यहीं पैदा हुए थे वे चले गए हैं और जाते हुए बताकर भी नहीं गए कि हम कहाँ जा रहे हैं? तेरे दिल को अभी भी ठोकर नहीं लगी कि मैं भी **परमात्मा की भक्ति** करूं, परमात्मा का प्यारा बनूं।''

मैं बताया करता हूँ कि जब घर मे मौत आती है पुत्र, माता के साथ सलाह नहीं करता। पिता, बेटे के साथ सलाह नहीं करता वक्त आने पर सब अपने-अपने रास्ते पर चले जाते हैं, कोई किसी को बताकर नहीं जाता। मौत आने पर हम उसे कंधे पर उठाकर श्मशान भूमि में ले जाते हैं लेकिन भूल जाते हैं कि एक दिन हमारे साथ भी ऐसा ही होगा। हम सोचते हैं कि मौत लोगों के लिए है शायद! हमारे लिए तो ऐसा वक्त नहीं आएगा।

फरीदा मन मैदान कर टोए टिब्बे लाह।।
अग्गे मूल न आवसी दोजक संदी भाह।।

किसी ने फरीद साहब से सवाल किया कि आप हमें परमात्मा को पाने का उपदेश दें, वह साधन बताएं जिससे हम परमात्मा से मिल सकें? फरीद साहब ने कहा, ''सबसे पहले आप मन के मैदान को साफ करें। आपके अंदर काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार डेरा लगाकर बैठे हुए हैं ये आपका पीछा नहीं छोड़ रहे आप इनकी तरफ पीठ कर ले फिर आपको दोजक की आग नहीं झेलनी पड़ेगी।''

फरीदा खालक खलक मह खलक वसै रब माहिं।।
मंदा किस नों आखीऐ जां तिस बिन कोई नाहिं।।

अब गुरु अर्जुनदेव जी की बानी है। आप कहते हैं, ''देख भई फरीद! खिलकत उस परमात्मा में बसती है और परमात्मा खिलकत में बसता है। हम किसे बुरा कहें किसके साथ नफरत करें। यह संसार परमात्मा के बगैर कायम नहीं रह सकता। परमात्मा ही

सबके अंदर बैठा है। आप सोचकर देखें! किसी को बुरा कहना, किसी कौम या समाज के साथ नफरत करना तो इस तरह है जैसे हम परमात्मा के साथ ही नफरत कर रहे हैं।''

हमें चाहिए कि महात्मा की बानी को प्यार और ठंडे दिल से समझें। किसी के साथ नफरत नहीं करनी। पता नहीं काल ने किस समय आवाज लगा लेनी है। परमात्मा खिलकत में बसता है, खिलकत परमात्मा में बसती है। हमने सबको परमात्मा की खिलकत समझकर सबके साथ प्यार करना है।

DVD No - 83

***

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज के मुखारविन्द से अनमोल वचन

शादी

मैं शादी की रस्म को देखकर बहुत खुश और प्रभावित हुआ हूँ लेकिन मैं इसके मुत्तलिक दो चार शब्द कहना चाहूंगा। अगर पश्चिम के लोग इस पर अमल करेंगे तो हर किसी का जीवन आसान हो जाएगा। हमें सबसे पहले यह ज्ञान होना चाहिए कि शादी क्यों की जाती है और शादी के क्या फायदे हैं? अगर हम शादी के नियमों का पालन नहीं करते तो इसके क्या नुकसान हैं?

हिन्दुस्तान में भी शादियां किसी ईष्ट, भाई, पादरी या महात्मा की मौजूदगी में भाई-चारे के अंदर बैठकर की जाती हैं। पहले इंसान जंगलों में जानवरों की तरह जीवन व्यतीत करता था, इसे ज्ञान नहीं था कि किस तरह अपने शरीर को ढ़कना है और रहने के लिए मकान बनाना है या किस तरह एक-दूसरे का आदर करना है? परमात्मा ने दुनिया को मर्यादा में रखने के लिए ऋषियों मुनियों और साधुओं को संसार में भेजा कि आप जाकर लोगों को जीने का ढ़ग और मर्यादा बताएं।

ऋषियों-मुनियों और साधुओं ने हमें बताया कि औरत-मर्द का जोड़ा जीवन का निर्वाह करने के लिए बनाया गया है। जब हम किसी को अपने साथी के रूप में चुन लेते हैं, ईष्ट देवता के आगे खड़े होकर रस्मों-रिवाज कर लेते हैं तब हम यह प्रण करते हैं कि हम मिलकर एक दूसरे के सुख-दुख में साथ देंगे। कुछ समय यह परंपरा ठीक चली, एक-दूसरे का साथ देकर धर्म निभाते रहे।

शादी को निभाना औरत और मर्द दोनों का धर्म है लेकिन अफसोस से कहना पड़ता है कि पश्चिम के लोग इस प्रण को

तोड़कर तलाक तक नौबत ले आते हैं फिर न औरत मर्द की कद्र करती है और न मर्द औरत की कद्र करता है। यह बहुत बुरी बात है कि हम शादी को निभाते नहीं, अपना जीवन बर्बाद कर लेते हैं।

जब हम किसी ईष्ट, महात्मा या दुनिया के सामने बैठकर एक-दूसरे का साथ निभाने का प्रण कर लेते हैं तो हमें यह प्रण नहीं तोड़ना चाहिए। चाहे कोई भी समस्या आए हमें प्यार से उसे हल करना चाहिए,इस परंपरा को जिदंगी भर कायम रखना चाहिए।

सन्तमत में यह खास लिखा हुआ है अगर कोई मर्द पराई औरतों के पास जाएगा तो उसके ऊपर बहुत से पापों का बोझ हो जाता है अगर कोई औरत अपने पति को छोड़कर पराए मर्द के पास जाती है तो वह बहुत से पापों का बोझ इकट्ठा कर रही है। शादी का मतलब काम-वासना नहीं बल्कि अपनी जिंदगी को आसान बनाना है। शादी का मकसद एक-दूसरे के साथ जिदंगी के सफर को आसान करना है। गुरु नानक साहब कहते हैंः

कामवन्त कामी बोह नारी पर गृह जोय न चूके।
दिन परत करे करे पछतापे लोभ मोह में सूके।।

काम-वासना में पड़कर कोई आदमी चाहे कितनी भी औरतों के पास चला जाए और कोई औरत काम-वासना में पड़कर चाहे कितने भी मर्दों को भोग ले उसकी कामवासना कम नहीं होगी बल्कि और भड़केगी। हम काम इन्द्री के बस होकर दिन-रात पाप कमा रहे हैं और पछता रहे हैं। काम भोगने से कोई खुशी नहीं होती। जो सतसंगी यह कहते हैं कि हमारा भजन-अभ्यास नहीं बनता उनमें यही कमी होती है।

कबीर साहब कहते हैं, ''जहाँ काम है वहाँ नाम प्रकट नहीं होता। जहाँ नाम है वहाँ काम कभी भी पर नहीं मार सकता। जहां

दिन है वहाँ रात नहीं, जहाँ रात है वहाँ दिन नहीं।'' शादी करवाना बुरी बात नहीं। शादी-शुदा जीवन व्यतीत करना अच्छा है। मैं इसकी कद्र करता हूँ लेकिन हर किसी को इसके कायदे-कानूनों का सख्ती से पालन करना चाहिए।

आप अभी भी हिन्दुस्तान में देख सकते हैं चाहे पति पर कितनी भी गरीबी, बीमारी और कोई भी तकलीफ आ जाए पत्नी उसका साथ नहीं छोड़ती। अगर औरत को कोई भी मुसीबत बीमारी आ जाए पति उसके ऊपर दिल खोलकर पैसा खर्च करता है और हर किस्म की मदद करता है। वे कभी भी एक-दूसरे को छोड़ने की सोच भी नहीं सकते। पतिव्रता धर्म में बहुत शक्ति होती है।

फरीद साहब ने गले में जंजीर डालकर कुंए में लटककर बारह साल तक तप किया। फरीद साहब ने सोचा कि देखूं! इस तप में कोई शक्ति है? वहाँ चिड़ियां चोगा चुग रही थी। फरीद साहब ने उन चिड़ियों को श्राप दिया कि मर जाओ; वे चिड़ियां मर गई। फिर उन चिड़ियों से कहा कि उड़ जाओ, वे चिड़ियां उड़ गई। फरीद साहब के दिल में आया कि मैंने बहुत शक्ति हासिल कर ली है अब घर की तरफ चलते हैं।

जब फरीद साहब घर की तरफ आ रहे थे तो आपने देखा कि एक शादी-शुदा लड़की कुएं से पानी निकाल रही थी। आपने उस लड़की से कहा, ''मुझे पानी पिला।'' लड़की ने कहा, ''थोड़ी दे रूक जाओ पानी पिला दूंगी।'' वह लड़की कुएं में से पानी का डोल भरकर अपने पैरों पर गिराती जा रही थी। फरीद साहब ने उस लड़की से कहा, ''तू मुझे जल्दी से पानी पिला नहीं तो मैं तुझे श्राप दे दूंगा।'' लड़की ने कहा, ''मैं चिड़िया नहीं हूँ। जिसे तू मरने के लिए कहेगा तो वह मर जाएगी और उड़ने के लिए कहेगा तो वह

उड़ जाएगी। मेरा घर यहाँ से काफी दूर है, मेरे घर में आग लगी हुई है मैं अपने घर की आग बुझाकर फिर तुझे पानी पिलाऊंगी।''

फरीद साहब को बहुत अचरज हुआ कि मैंने बारह साल कुएं में लटककर इतना कठिन तप किया है। फरीद साहब ने उससे पूछा, ''तूने इतनी शक्ति कहाँ से प्राप्त की है?'' उस लड़की ने कहा, ''मैंने यह शक्ति अपने पति की सेवा करके प्राप्त की है। मैं अपने पतिव्रता धर्म में कायम हूँ।'' औरत-मर्द हर किसी को अपने धर्म में कायम रहना चाहिए।

सिक्ख इतिहास का एक मशहूर वाक्या है। जिस समय गुरु अर्जुनदेव जी महाराज श्री अमृतसर साहब में स्वर्ण मंदिर में चिनाई की सेवा करवा रहे थे। उस समय एक औरत वहाँ सेवा कर रही थी। वह सिर से टोकरा गिराकर दोनों हाथ इस तरह हिला देती जैसे झूला झुलाते हैं। कुछ सेवादारों ने सोचा शायद यह पागल है कि टोकरा गिराकर इस तरह से हाथ हिला देती है।

एक सेवादार ने उस औरत से पूछा, ''तू टोकरा गिराकर इस तरह हाथ क्यों करती है?'' उस औरत ने कहा, ''मेरा घर यहाँ से तीन मील दूर है। मैं अपने बच्चे को झूले में सुलाकर आई हूँ। मैं इस तरह हाथ हिलाकर झूला हिला देती हूँ कि मेरा बच्चा सोता रहे और मैं यहाँ सेवा भी कर जाऊं।'' सेवादार ने कहा कि तू इतनी दूर से अपने बच्चे का झूला कैसे हिला रही है, तुझमें इतनी शक्ति कहाँ से आई? उस औरत ने कहा कि पतिव्रता धर्म की वजह से मुझमें यह शक्ति है, मुझे मेरा बच्चा तीन मील से दिख रहा है।

महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे, ''जैसे माँ-बाप वैसे ही बच्चे।'' आप एक बड़ी मशहूर मिसाल देकर समझाया करते थे कि एक बादशाह की लड़की का किसी दूसरे बादशाह के लड़के के

साथ प्यार हो गया। लड़की वालों ने कहा कि आप अपने लड़के का रिश्ता हमारी लड़की के साथ कर दें लेकिन वे नहीं माने। लड़की ने लड़के से कहा कि हम कहीं दूर जाकर शादी कर लेंगे।

एक रात लड़का-लड़की ऊँटनी पर बैठकर घर से निकल पड़े। रास्ते में एक नदी आई, ऊँटनी उस नदी में बैठने लगी तब लड़की ने लड़के से कहा इसकी लगाम खींच यह पानी में बैठ जाती है; इसकी माँ को भी पानी में बैठने की आदत थी। लड़के ने सोचा! जब जानवरों पर भी अपने माँ-बाप का असर होता है तो जिसे मैं आज लेकर जा रहा हूँ उसके पेट से जो औलाद पैदा होगी वह भी इसी तरह किसी के साथ चली जाएगी।

लड़के ने लड़की से कहा कि अभी बहुत रात बाकी है। मैं कोई बहुत जरूरी चीज घर पर भूल आया हूँ। हम वह चीज लेकर फिर वापिस आ जाएंगे। वापिस पहुंचकर लड़के ने लड़की से हाथ जोड़कर कहा, ''तू अपने घर जा, मैं अपने घर जाता हूँ।''

महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे अगर हम ठीक नहीं तो हमारे बच्चे भी ठीक नहीं होंगे। इसलिए माँ-बाप को काबिल बनना चाहिए ताकि औलाद पर अच्छा असर पड़े।

मैं इन जोड़ों को शुभकामनाएं देते हुए यह भी कहूँगा कि अपना सुखी जीवन बिताने के लिए अपने साथी के साथ सख्ती के साथ पालन करें ताकि और लोग भी हमारे जीवन को देखकर फायदा उठाएं। हम अपनी परंपरा को कायम रखें ताकि तलाक की नौबत न आए। किसी भी कौम में तलाक को अच्छा नहीं समझा जाता सिर्फ करप्शन की वजह से हमने इसको एक रस्मो-रिवाज बना लिया है। जिस तरह आज आपने प्रण किया है इसे प्यार से जिदंगी भर निभाएं।

***

23 जून 1977

धन्य अजायब

दिल्ली में मई प्रोग्राम

अहमदाबाद में सतसंग का कार्यक्रमः

जुलाई